(2)

हरित क्रांति और समस्याएँ

हरित क्रांति ने देश को जहाँ खाद्यान्न उत्पादन और कृषि के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता दी वहीं कुछ समस्याएँ भी उत्पन्न कर दीं, जिसे हम निम्न तरीके से देख सकते हैं।

हरित क्रांति → पर्यावरणीय समस्या
→ आर्थिक समस्या
→ सामाजिक समस्या

सामाजिक आर्थिक प्रभाव:-

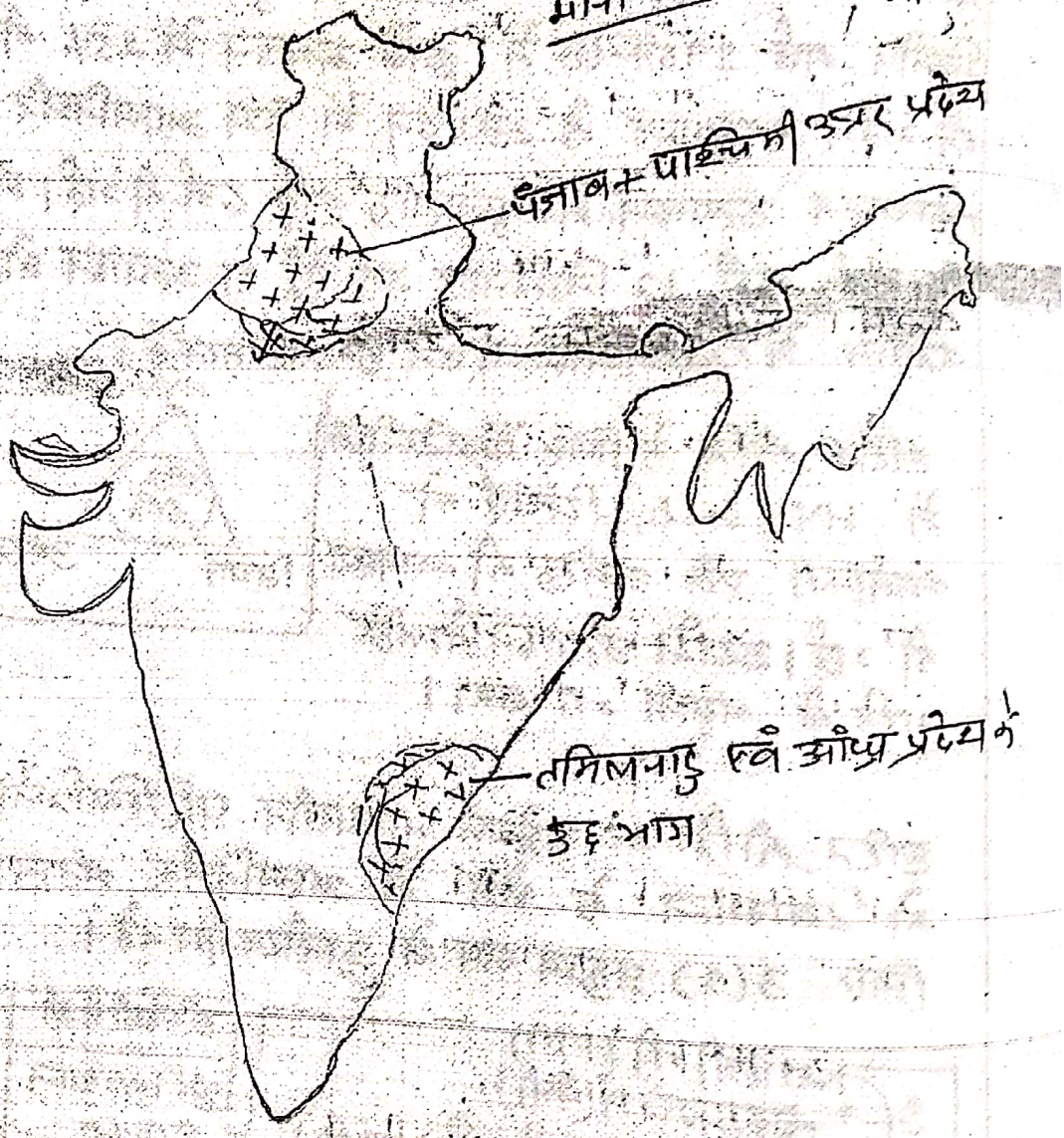

मानचित्र में देखा जा सकता है कि हरित क्रांति पंजाब, हरियाणा एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश के साथ तमिलनाडु एवं आंध्र प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में ही सीमित रहा। इसके सीमित क्षेत्र के होने के कई प्रभाव पड़े।

Scanned with CamScanner

(1) मृदा का लवणीकरण
(2) भौम जल में गिरावट
(3) मलेरिया का प्रभाव (स्वास्थ्य संबंधी)
(4) वनों पर प्रभाव
(5) मृदा अपरदन
(6) वायु पर प्रभाव

मृदा का लवणीकरण + भौम जल में गिरावट :-

पंजाब में खासकर पश्चिमी पंजाब में मृदा का लवणीकरण अत्यधिक सिंचाई के कारण हो गया। इस कारण से भूमि की उर्वरा शक्ति अत्यंत मंद हो गई।

इसके साथ ही हरियाणा के पूर्वी भाग में भौम जल का अत्यधिक दोहन किया गया। इस कारण जल संकट की स्थिति बन गई।

मलेरिया का रोग विस्तार :-

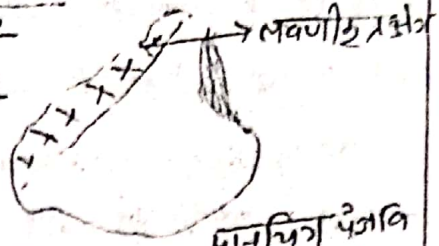

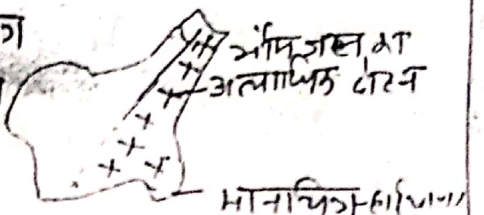

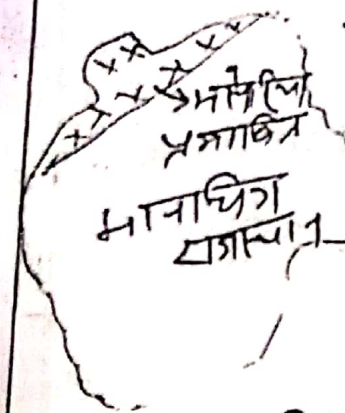

राजस्थान के इंदिरा गांधी नहर का प्रभाव से मलेरिया के प्रकोप में वृद्धि हुई। इसका कारण पानी का ठहराव एवं जल निकासी की प्रभावित व्यवस्था का नहीं होना है।

वन का विनाश एवं मृदा अपरदन

हरित क्रांति के बाद कृषि क्षेत्र में विस्तार के लिए वन क्षेत्र को नुकसान पहुंचाया गया। इस कारण से पंजाब और हरियाणा में वन क्षेत्र में भारी कमी आई। साथ ही मृदा अपरदन की नई समस्या बन गई। उत्तरी पंजाब के जिलों में शिवालिक के क्षेत्रों ~~[illegible]~~ वनों का विनाश हुआ और होशियारपुर में सर्वाधिक मृदा अपरदन हुआ जिसे चोस कहते हैं।

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

③
(1) क्षेत्रीय असमानता में बढ़ोतरी
(2) अंतः क्षेत्रीय असमानता (उत्तरी पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश आदि)
(3) फसल संयोजन में परिवर्तन
(4) बड़े किसानों को लाभ

(1) क्षेत्रीय/अंतः क्षेत्रीय असमानता में वृद्धि :-

क्षेत्रीय तथा अंतः क्षेत्रीय असमानता में हरित क्रांति के बाद वृद्धि हुई। पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु एवं आंध्र प्रदेश के कुछ भाग के अलावा संपूर्ण देश में इसका असर नहीं दिखा। क्षेत्र विशेष में इस कारण से आर्थिक समृद्धि हुई वहीं अन्य क्षेत्र पिछड़ गए।

(3) फसल संयोजन में परिवर्तन :-

हरित क्रांति में फसल संयोजन पूरी तरह से बदल गया। जैसे गेहूं के स्थान पर चावल की खेती शुरू की जाने लगी। खाद्यान्न पर जोर दिया गया और दलहन-तिलहन पिछड़ गया।

(4) बड़े किसानों को लाभ :-

हरित क्रांति का लाभ अधिकांश बड़े किसानों को प्राप्त हुआ। इस कारण से सामाजिक असमानता में भी वृद्धि हुई।

(5) कृषि मजदूरों का पलायन :-

कृषि मजदूरों का पलायन शहरों की ओर होने लगा क्योंकि यंत्रीकरण से कृषि मजदूरों का रोजगार छिनने लगा।

पर्यावरणीय प्रभाव :-

कृषि में उर्वरक एवं कीटनाशकों के अंधाधुंध उपयोग और अत्यधिक सिंचाई से कई पर्यावरणीय समस्याएं खड़ी हो गई।

Scanned with CamScanner